दिनांक - 08-02-2024

अनिल कुमार, इतिहास विभाग, आर० बी० जी० आर० कॉलेज, महाराजगंज
TDC PART I, HISTORY (Hon), PAPER - I

सिन्धु घाटी के निवासियों की नगर योजना

विश्व की प्राचीन नदीघाटी सभ्यताओं में सिन्धुघाटी या हड़प्पा की सभ्यता एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सभ्यता भी मिस्र और मेसोपोटामिया के सभ्यताओं की तरह अति प्राचीन हैं। इतना ही नहीं, भवन निर्माण और नगर निर्माण योजना के क्षेत्र में तो यह सभ्यता मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं से भी अधिक विकसित थी। नगर बसाने की योजना और भवन निर्माण कला सिन्धु सभ्यता की उत्कृष्ट विशेषता थी।

हड़प्पा-संस्कृति नागरी संस्कृति थी। इस काल में अनेक नगरों का उदय हुआ। यूँ तो इस सभ्यता के लगभग एक हजार स्थानों का पता चला हैं जिनमें कुछ ही परिपक्व अवस्था में प्राप्त हुए हैं, केवल 6 को ही नगर की संज्ञा दी जाती है ये हैं - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल, कालीबंगा, हिसार एवं बनवाली।

श्री दीक्षित के अनुसार इस सभ्यता में नगर निर्माण प्रणाली इतनी विशद थी कि ऐसी उत्तम प्रणाली संसार के अन्य किसी प्राचीन देश में देखने को नहीं मिलती है। वहाँ की इमारतों में पकी हुई ईंटों का व्यवहार होता था। ऐसा प्रतीत होता है कि शहर एक निश्चित योजना के आधार पर बसाया गया था। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में अद्भुत समता है। नगरों की रक्षा के लिए चारो ओर से दिवारों का प्रबंध था। हड़प्पा में नगर रक्षा की प्रधान दीवारें कच्ची ईंटों की बनी थी। मकान प्रायः दो खण्ड के होते थे। इन मकानों की छत पर समतल फर्श होता था। मोहनजोदड़ो के भवनों में आम सड़कों की ओर कम दरवाजे पाये गये हैं। उपरी खण्डों में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी होती थी। दिवाल पर मिट्टी और चूने के प्लास्टर का व्यवहार होता था। एक ही योजना निर्माण का आधार थी। बड़े-२ मकानों में अतिथि गृह एवं विश्रामागार का प्रबंध था। प्रत्येक मकान में द्वारपाल के रहने की व्यवस्था थी। चूल्हे मकान के बाहर बनते थे

कुएँ भी बनते थे। कई घरों में निजी स्नानगृह थे।

नालियों का इतना सुन्दर प्रबंध था कि अन्य प्राचिन देशों में ऐसा कहीं नहीं मिलता है। प्रत्येक सड़क तथा गली में नालियाँ बनी थी। नालियां 9" से 18" तक गहरी होती थी। सड़कों पर नालीयाँ बनी हुई थी और प्रत्येक घर की नाली वहां जाकर गिरती थी। बीच-बीच में पानी रोकने के लिए छोटे-छोटे गढे भी होते थे, जिनमें गन्दगी जमने पर निकाल दी जाती थी। क्रीट की राजधानी 'नौसस' को छोड़कर पानी निकालने का ऐसा प्रबंध शायद और कहीं नहीं था। स्वास्थ्य एवं सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

मोहनजोदड़ों में एक विशाल स्नानागार भी मिला है। इसमें बड़े सुन्दर ढंग से ईंटों का काम किया हुआ है। नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई है। इनके पार्श्वों में कपड़ा बदलने की कोठरियां बनी हुई है। स्नानागार में पानी लाने और निकालने का भी रास्ता बना था।

सबसे बड़ी सड़क 33 फुट चौड़ी थी। सम्भवतः यह राजमार्ग था, क्योंकि समस्त सड़कें इस सड़क से मिलती थी। सड़कें उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की ओर जाती थी। शहर का आकार समकोण चतुर्भुज था। सड़कें एक दूसरे से समकोण पर मिलती थी। गलियां 3 फूट से 7 फूट चौड़ी होती थी। सड़कों पर उचित स्थानों पर कुड़ेखाने बने हुए थे। नगर योजना की आधार पीठिका थी- नगर की प्रमुख सड़कें। प्रत्येक नगर सड़कों द्वारा कई खण्डों में विभक्त थीये ही खण्ड मुहल्लों के रूप में हो जाते थे। इन खण्डों में एक निश्चित योजना के आधार पर भवनों का निर्माण होता था। मोहन जोदड़ो में सड़कों और नालियों की ऐसी सुव्यवस्था 18वीं शताब्दी तक पेरिस और लन्दन में भी नहीं थी।

To be continued in next class...

08-02-2024

अनिल कुमार, इतिहास विभाग, आर०बी० जी० आर० कॉलेज, महाराजगंज
TDC PART II, HISTORY (Hon); PAPER-III

"सिन्ध पर अरब आक्रमण एक घटना मात्र थी" इस कथन की समीक्षा करें।

प्रसिद्ध इतिहासकार हेग महोदय का कथन है कि "भारतीय इतिहास में अरबों की सिंध विजय एक गौण और महत्वहीन घटना थी" इस विशाल देश का एक सीमान्त प्रदेश (सिंध) ही इस घटना से थोड़ा बहुत प्रभावित हुआ। घटना के दूरगामी प्रभाव नहीं पड़े एवं लेनपूल के अनुसार "अरबों की सिंध विजय इस्लाम तथा भारत के इतिहास में एक साधारण घटना थी यह एक ऐसी विजय थी जिसका कोई गहरा परिणाम नहीं हुआ।" इस प्रकार हेग महोदय के विचार लेनपूल के विचार की तरह है। कुछ इसी प्रकार का विचार इतिहासकार टॉड महोदय का भी है।

अतः स्वभाविक प्रश्न उठता है कि अरबों की असफलता के क्या कारण थे जिनसे सिंध पर उनकी विजय अरब और भारत में घटना मात्र (Episode) रह गई। इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित तर्क दिए जा सकते हैं।

मुहम्मद बिन कासिम का असामयिक देहान्त – सिंध विजेता कासिम के असामयिक निधन के पश्चात् अरबी सैनिकों का उत्साह भंग हो गया। कासिम ने मुल्तान विजय के उपरांत अपने एक सेनानायक को कन्नौज जो उत्तर भारत का मुख्य राजनीतिक केन्द्र था विजय के लिए भेजा। कासिम का कन्नौज अभियान असफल रहा। इस बीच कासिम का भी दर्दनाक अंत हो गया। सैनिकों का जोश ठंढा पड़ गया और साम्राज्य विस्तार की भावना मर गई। फलतः अरब आक्रमणकारी सिंध से आगे न बढ़ सके।

सिंध की आर्थिक विपन्नता – सिंध मरूस्थल था जहाँ विजेताओं को कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं हो सका। साथ ही जलाभाव, उत्तम फल, मेवे आदि के अभाव में आक्रमणकारियों के जोश ठंढे पड़ गये। उन्होंने गलत रास्ते से भारत में प्रवेश किया था। सिंध भारत का एक सीमान्त प्रदेश था जिसे आधार बनाकर दूसरे प्रदेशों पर सफलतापूर्वक

Teacher's Signature ....

आक्रमण नहीं किया जा सकता था। यही कारण था कि अरबों के बाद अन्य मुस्लिम आक्रमणकारियों ने खैबर के दर्रे से भारत में प्रवेश किया।

खलीफाओं की उदासीनता। — कासिम के निधन के पश्चात् खलीफाओं ने अरब सैनिकों को सहायता देना बन्द कर दिया। कारण यह था कि सिंध विजय से कोई विशेष आर्थिक लाभ की सम्भावना नहीं थी। अतः सिंध स्थित अरबी सुबेदारों को अपने ऊपर निर्भर रहना पड़ा। फलतः, वहाँ शासन शिथिल पड़ गया। खलीफाओं के पारस्परिक संघर्ष ने भी भारत स्थित अरबी शासन व्यवस्था को नुकसान पहुँचाया। उम्मैयद वंश एवं अब्बासीद वंश के खलीफाओं के बीच संघर्ष ने आपसी घरेलू संघर्ष में, भारत के तरफ ध्यान देने का मौका न दिया।

शक्तिशाली राजपूतों का विरोध — लेनपूल के विचार में अरबों की सफलता का प्रमुख कारण शक्तिशाली राजपूतों का विरोध था। उत्तर भारत में शक्तिशाली राजपूत राज्य थे। राजपूत बिना भीषण संग्राम किए एक इंच भूमि देने को तैयार न थे। प्रसिद्ध इतिहासकार एलफिन्स्टन ने भी इस विचार का समर्थन किया है।

श्रेष्ठ हिन्दू संस्कृति — हिन्दू संस्कृति श्रेष्ठ थी। भारत का दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित, साहित्य आदि उन्नत वस्था में थे। दूसरी ओर अरबों में कोई ऐसी आकर्षण विद्या नहीं थी जिससे भारतवासी उनकी ओर आकृष्ट होते। इसके विपरीत अरबवालों ने ही भारत से कुछ सीखा। भारत में पंडितों या पुरोहितों का आम जनता पर विशेष प्रभाव था। वे विदेशी सभ्यता संस्कृति के निन्दक थे। वे विदेशी आक्रमणकारियों को म्लेच्छ कहते थे। वे अरबों से घृणा करते थे। वे उनकी सभ्यता संस्कृति को अग्राह्य समझते थे। फलतः अरबों के असभ्य अतिक्रमण से हिन्दू समाज सर्वथा अपरिवर्तित रहा।

Teacher's Signature

To be continued in next class.

नसिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ (1530-1540)

"हुमायूँ जीवन पर्यन्त लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए ही उसकी मृत्यु हुई" इस कथन की समीक्षा करें।

बाबर के मरणोपरांत 30 दिसम्बर 1530 ई० को 23 वर्ष की आयु में हुमायूँ मुगल- सिंहासन पर बैठा। विरासत के रूप में मिली कठिनाइयों के बावजूद वह निराश नहीं हुआ। असफलताओं ने हुमायूँ को अकर्मण्य नहीं बनाया और भारत की पुनः विजय, हुमायूँ को भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। उसकी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ, उसकी सफलताएँ और असफलताएँ सभी कुछ मिलाकर हुमायूँ के प्रति सहानुभूति का दृष्टिकोण बनाती है और इसी कारण इतिहासकार इसे "भाग्यहीन हुमायूँ" पुकारते हैं।

लेनपूल का यह कथन "हुमायूँ जीवनपर्यन्त लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुये ही उसकी मृत्यु हुई" अंशतः सत्य तो अंशतः असत्य भी कहा जा सकता है। क्योंकि हुमायूँ के राज्यारोहण के समय राज्य को सुदृढ़ता प्राप्त नहीं हुई थी और नहीं अफगानों की शक्ति का पूर्णरूपेण दमन हो पाया था। मुगल राजघराना आपसी मतभेद से ग्रसित था और हुमायूँ के भाई और सम्बन्धी तथा सामन्त वर्ग उसका विरोध करने को उतारू हो रहे थे। जबकि दूसरी ओर पश्चिमी भारत के अफगान, गुजरात के शासक बहादुरशाह के नेतृत्व में तथा पूर्वी भारत में नुहानी शासक के नेतृत्व में संगठित हो रहे थे। ऐसी विषम परिस्थिति में एक योग्य और दूरदर्शी शासक ही मुगलसाम्राज्य को बिखरने से बचा सकता था। किन्तु दुर्भाग्यवश हुमायूँ में इन सब गुणों का सर्वथा आभाव था और इसलिए 10 वर्षों की अवधि मे हुमायूँ को न केवल राज्य से हाथ धोना पड़ा बल्कि भारत में मुगलों की सत्ता ही समाप्त हो गई और अगले 15 वर्षों तक भारत में अफगान शासकों का राज्य चला।

इसमें कोई संदेह नहीं कि हुमायूँ को अधिकतर असफलताएं हाथ लगीं लेकिन यह धारणा भ्रामक है कि हुमायूँ की असफलता केवल उसके व्यक्तिगत अवगुणों के कारण हुई। इसके विपरीत यदि हम हुमायूँ के शासन काल को दो भागों में बाँटे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि 1530-1536 के बीच हुमायूँ अपनी समस्याओं के समाधान में पूर्णतः सफल रहा। 1537 के बाद ही उसकी असफलताएँ आरम्भ होती है। यह स्मरणीय है कि हुमायूँ का संघर्ष शेरखां के विरुद्ध 1537 ई० के बाद ही शुरू हुआ।

अपने राज्यारोहण के समय हुमायूँ ने अपने समक्ष के समस्याओं को सुलझाने में पूरी अभिरुचि दिखाई। उस समय शेरखाँ एक मामूली सैनिक सरदार था। अभी अफगानों का नेतृत्व बिहार के नूहानी शासकों और गुजरात के शासक बहादुरशाह में निहित था। नूहानी शासकों को बंगाल का सम्पूर्ण समर्थन और सहयोग प्राप्त था। पूर्वी भारत के अफगानों को बाबर ने भी घाघरा के युद्ध में पराजित किया था किन्तु इसकी शक्ति का पूर्ण रूपेण दमन नहीं हो पाया था। अतः हुमायूँ ने इस अधूरे कार्य को पूरा करने का प्रयास किया। 1532 ई० में उसने दौरा की लड़ाई में नूहानी और फरमूली शासकों को परास्त किया। इस पराजय का नूहानियों की शक्ति पर घातक प्रभाव पड़ा और वे दुबारा हुमायूँ के समक्ष नहीं उठ खड़े हुये। लेकिन इस सफलता ने हुमायूँ की समस्याओं को सुलझाने के बजाय और भी जटील बना दिया क्योंकि अब पूर्वी भारत मे शेरखाँ के प्रभाव में वृद्धि होने लगी और अफगानों के नेता के रूप में उसके उदय का मार्ग प्रशस्त हो गया।

ठीक उसी समय हुमायूँ के दूसरे प्रतिद्वंद्वी अर्थात गुजरात के शासक बहादुरशाह की शक्ति में चिन्ताजनक हद तक वृद्धि होने लगी। हुमायूँ ने उसकी ओर ध्यान देना उचित समझा। अतः 1537 ई० में हुमायूँ ने मालवा के मार्ग से गुजरात पर आक्रमण किया। उसने बहादुरशाह को पराजित किया और गुजरात का शासन अपने भाई अस्करी के अधीन छोड़कर वापस आगरा आ गया। लेकिन अस्करी गुजरात पर नियंत्रण रख सकने में असमर्थ साबित हुआ और एक ही वर्ष में बहादुरशाह ने गुजरात और मालवा पर पुनः अधिकार कर लिया। अब हुमायूँ के लिए दोबारा सैनिक अभियान करना आवश्यक हो गया। उसके इस अभियान से बहादुरशाह का नाश हो गया।

जिस समय हुमायूँ बहादुरशाह के साथ संघर्ष में व्यस्त था उस समय पूर्वी भारत में शेरखाँ अपनी शक्ति का विस्तार कर रहा था। उसने सूरजगढ़ा की लड़ाई (1536) में बंगाल के शासक को पराजित किया था, और 1537 ई० में उसने बंगाल की राजधानी गौड़ पर अधिकार कर लिया। बंगाल का शासक महमूदशाह अब हुमायूँ से सहायता माँगने के लिए आगरा की ओर बढ़ा।

To be continued in next class....